

## रिश्तो में मुहब्बत कैसे पैदा करे ?

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohot books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronounciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

\*\*\*\*\*

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

अर्बयीने उसरा

40 सुन्हरी इस्लामी तालीमात घरो की खुश हाली के लिए

**AIP LOGO**

## Concept & Preparation

SHAIK ARSHAD BASHEER UMARI MADANI

MBA, Pursuing Ph.D from Switzerland

Founder & Director – AskIslamPedia.com

1. एक दूसरे को सलाम करे। (मुस्लिम:54)
2. उनसे मुलाखात करने जाए। (मुस्लिम:2567)
3. उनके पास बैठने उठने का मामूल बनाये। (लुख्मान:15)
4. उनसे बात चीत करे। (मुस्लिम:2560)
5. उनके साथ लुत्फ़ व मेहेरबानी से पेश आये। (सुनन तिरमिज़ी:1924, सहीह)
6. एक दूसरे को हदिया व तोहफा दिया करे। (सहीह अल जामे:3004)
7. अगर वो दावत दे तो खुबूल करे। (मुस्लिम:2162)
8. अगर वो मेहमान बन कर आये तो उनकी जियाफत करे। (तिरमिज़ी:2485)
9. उन्हें अपनी दुआओ में याद रखे। (मुस्लिम:2733)
10. बड़े हो तो उनकी इज्जत करे। (सुनन अबू दावूद:4943, सुनन तिरमिज़ी:1920, सहीह)
11. छोटे हो तो उन पर शफख़त करे। (सुनन अबू दावूद:4943, सुनन तिरमिज़ी:1920, सहीह)
12. उनकी खुशी व ग़म में शरीक होना। (सहीह बुखारी:6951)
13. अगर उनको किसी बात में इयानत दरकार हो तो इस काम में उनकी मदद करे। (सहीह बुखारी:6951)
14. एक दूसरे के ख़ैर ख़्वाह बने। (सहीह मुस्लिम:55)
15. अगर वो नसीहत तलब करे तो उन्हें नसीहत करे। (सहीह मुस्लिम:2162)
16. एक दूसरे से मशवरा करे। (आले इमरान:159)
17. एक दूसरे की घीबत ना करे। (अल हुजुरात:12)
18. एक दूसरे पर तान ना करे। (अल हमज़ा:1)
19. पीट पीछे बुराईया ना करे। (अल हमज़ा:1)
20. चुध्ली ना करे। (सहीह मुस्लिम:105)
21. आड़े नाम ना रखे। (हुजुरात:11)
22. ऐब ना निकाले। (सुनन अबू दावूद:4875)
23. एक दूसरे की तकलीफों को दूर करे। (सुनन अबू दावूद:4946, सहीह)
24. एक दूसरे पर रहम खाए। (सुनन तिरमिज़ी:1924, सहीह)
25. दूसरो को तकलीफ़ देकर मज़े ना उठाये। (सूरा मुतफिफ़ीन इ सबख)
26. ना जायज़ मसाबिखत ना करे। मसाबिखत करके किसी को गिराना बुरी आदत है। इससे ना शुक्री या तहख़ीर के जज़्बात पैदा होते है। (सहीह मुस्लिम:2963)
27. नेकियो में सबख़त और तनाफुस जायज़ है, जबके उसके आड़ में तकब्बुर, रियाकारी, तहख़ीरकार का फरमा ना हो। (अल मुतफिफ़ीन:26)
28. तमा, लालच और हिर्स से बचे। (अल तकासुर:1)
29. ईसार व खुरबानी का जज्बा रखे। (अल हषर:9)

30. अपने से ज्यादा आगे वाले का खयाल रखे। (अल हषर:9)
31. मजाख में भी कीसी को तकलीफ ना दे। (अल हुजुरात:11)
32. नफ़ा बख़्श बनने की कोशिश करे। (सहीह जामे:3289, सहीह)
33. एहतेराम से बात करे, बात करते वख़्त सख़्त लहजे से बचे। (आले इमरान:159)
34. घैबाना अच्छा जिकर करे। (तिरमिज़ी:2737, सहीह)
35. गुस्से को कण्ट्रोल में रखे। (सहीह बुखारी:6116)
36. इन्तेखाम लेने की आदत से बचे। (सहीह बुखारी:6853)
37. किसी को हखीर ना समझे। (सहीह मुस्लिम:91)
38. अल्लाह के बाद एक दूसरे का भी शुकर अदा करे। (सुनन अबू दावूद:4811, सहीह)
39. अगर बीमार हो तो इयादत के लिए जाए। (तिरमिज़ी:969, सहीह)
40. अगर किसी का इन्तेखाल हो जाए तो जनाज़े में शिरकत करे। (मुस्लिम:2162)

### ❖ सिला रहमी पर नबी ﷺ के इरशादात

- वो शख़्स जन्नत में दाखिल नहीं होगा जो सिला रहमी ना करता हो। (सहीह बुखारी:5984, मुस्लिम:2556)
- तुम अपने वो इंसान सीखो जिन के सबब से तुम सिला रहमी करोगे। क्यों कि सिला रहमी घर वालो में मुहब्बत का सबब है। माल में कसरत का जरिया है और उम्र में ज्यादाती का बाअस है। (सहीह जामे:1051)
- अगर कोई रिश्तेदार तुझ से खता तलखी करे तो तू उससे मेल झोल पैदा करने की कोशिश कर यही असल सिला रहमी है। सिला रहमी ये नहीं के खता ताल्लुख करने वाले के साथ तू भी रूठ कर बिछड जाए। (सहीह बुखारी:5991)
- जो शख़्स किसी दूसरे इंसान पर रहम नहीं करता अल्लाह भी उस पर रहम नहीं करता। (सहीह बुखारी:7376), सहीह मुस्लिम:2319)

**नोट :** इब्ने खाय्थिम रहिमहुल्लाह का खौल है : "हुखूख की आदायगी में गड़बड़ पैदा करने वाली चार बीमारिया है : किब्र, हसद, घुस्सा, और शहवत। ये बीमारियाँ सारी बुराइयों की जड़ है, इनसे जितना बचेंगे उतनी जिंदगी सुकून से गुजरेगी।

**जरीन खौल :** आप जहाँ बैठे है वहां से उठने के बाद भी आप की खुशबू बाखी रहे, जैसे के फूलो को उखाड़े जाने के बाद भी खुशबू बाखी रहती है। बुरे आदमी की मिसाल ऐसी है के गन्दगी उखाड़े जाने के बाद भी बदबू आती है। खुशबूदार फूल बने, बदबूदार बनने से बचे।

नोट : इस ब्रोचर में 40 तालीमात मुस्तनबत है, बयीना अलफ़ाज़ नबवी मुराद नहीं। कम्पोजिंग करने वाले शैख अब्दुल्लाह उमरी साहब और जमा हजरात का जिन्होने इस कार खैर में हिस्सा लिया तहम दिल से शुकर गुज़ार है, दुआ

गो है, अल्लाह इस ब्रोचर की नशर व इशात में हिस्सा लेने वालो को अज्रे  
अज़ीम अता फरमाए।